MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - IV

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 50**

विभाग 1 - गद्य

उ. 1 (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **संजाल पूर्ण कीजिए।** **1**

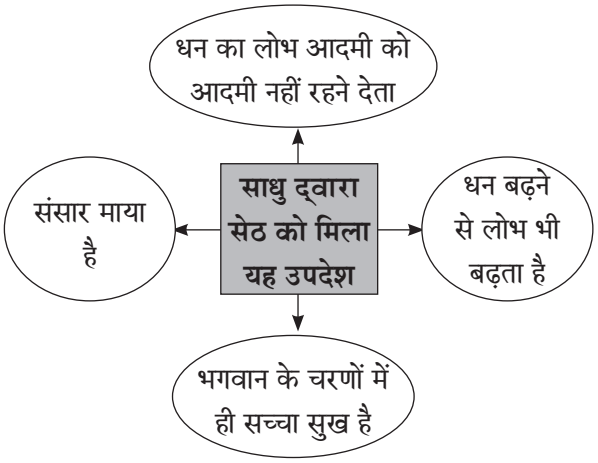

(ii) **परिणाम लिखिए।** **1**

(I) सकारात्मक प्रभाव पड़ा और धीरे-धीरे उसकी तबीयत सुधरने लगी।

(II) सेठ का साधु पर गहरा विश्वास हो गया और वह रोज साधु के पास आने लगा।

(2) (i) **गद्यांश में से शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(I) सात-आठ (II) धीरे-धीरे

(ii) **नीचे दिए शब्द के लिए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द लिखिए।** **1**

(I) सात - साथ (II) समाधि - समधी

(3) उपर्युक्त बिल्कुल शत प्रतिशत सही है। जीवन का सच्चा सुख धन का त्याग करनें में ही है। जिस व्यक्ति को धन का लोभ नहीं होता है; वह धन का कभी भी संचय नहीं करता है। जैसे-जैसे उसके पास धन आ जाता है; वैसे-वैसे वह धन दीन-दुखियों में बाँट देता है। दीन-दुखियों के चेहरे पर संतोष देखकर उसे अथाह खुशी मिलती है। ऐसा व्यक्ति सच्चे सुख का अनुभव करता है। जीवन में जो भी महान पुरुष हुए हैं, उन्होंने कभी भी धन का संचय नहीं किया था। आजीवन उन्होंने मानवता की भलाई हेतु ही कार्य किया। आखिर यह संसार एक माया है। धन का लोभ आदमी को आदमी नहीं रहने देता। जो व्यक्ति जितना धन का संचय करता है; उतना ही उसका लोभ बढ़ता जाता है। **2**

उ. 1 (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

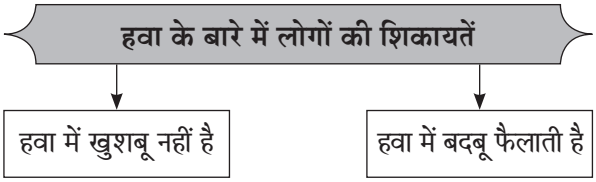

(ii) **उचित विकल्प चुनकर विधान पूर्ण कीजिए।** **1**

(I) हवा बदबूदार होने का कारण है कि **<u>हवा में कारखानों की गंदगी और गैस होती है।</u>**

(II) हवा पर आरोप लगाया गया था कि **<u>हवा में खुशबू नहीं होती।</u>**

(2) (i) **लिंग बदलिए।** **1**

(I) महाराज - महारानी (II) लड़की - लड़का

(ii) **निम्नलिखित शब्द के लिए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द लिखिए।** **1**

(I) रात - रत (II) डाल - दाल

(3) दिन-प्रतिदिन हानिकारक सामग्री के हवा में मिलने के कारण हवा प्रदूषित हो रही है। प्रदूषित हवा से लोग बीमार पड़ रहे हैं। हवा प्रदूषण से बचने के लिए हमें कूड़ा-कचरा यहाँ-वहाँ नहीं फेंकना चाहिए। कूड़ा-कचरा यहाँ-वहाँ फेंकने से गंदगी फैलती है जिससे हवा दूषित हो जाती है। कारखानों को आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करना चाहिए ताकि उनमें से जहरीली गैस और धुआँ बाहर न निकले और हवा में न मिले। लोगों को अपने वाहनों की नियमित जाँच करानी चाहिए, ताकि उनमें से अधिक धुआँ बाहर निकलकर हवा में न फैले। सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान पर रोक होनी चाहिए। हमें शहरीकरण की प्रक्रिया को रोकना चाहिए। गाँवों में ही रोजगार के साधनों को विकसित करना चाहिए, जिससे गाँव के लोग नौकरी करने के लिए शहर में पलायन न करें। इससे शहर और गाँव का असंतुलन धीरे-धीरे कम हो जाएगा और हवा प्रदूषण भी रुकेगा। धुएँवाले ईधनों का प्रयोग बंद कर देना चाहिए और भारी मात्रा में पेड़ लगाने चाहिए। इस प्रकार हवा प्रदूषण पर रोक लगाई जा सकती है। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ. 2 (अ)निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

(ii) **समझकर लिखिए।** **1**

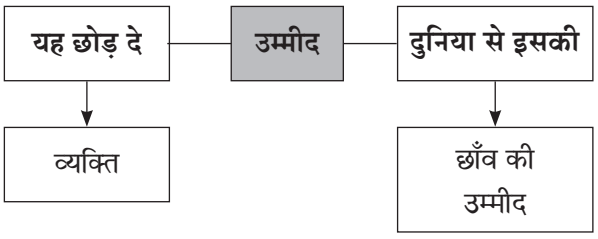

(2) **कविता में इस अर्थ में आए शब्द लिखिए।** **1**

(i) संसार - दुनिया (ii) स्वयं - खुद

(3) आत्मनिर्भर यानी स्वावलंबी। व्यक्ति को अपने जीवन में आत्मनिर्भर होना चाहिए। उसे दूसरों पर आश्रित नहीं होना चाहिए। यदि व्यक्ति अपने जीवन में दूसरों पर आश्रित रहता है, तो वह तरक्की नहीं कर सकता है। आत्मनिर्भर बनने के लिए व्यक्ति में दृढ़ इच्छा शक्ति का होना जरूरी होता है। आत्मनिर्भर व्यक्ति सदैव कोशिश करते रहता है। इसलिए वह सफलता की मंजिल हासिल करने में सफल हो जाता है। वह भाग्य के भरोसे नहीं बैठता है। आत्मनिर्भर बनकर वह अपनी क्षमताओं का विकास कर लेता है। अब्राहम लिंकन व नेपोलियन जैसे महापुरुषों का जन्म निर्धन **2**

परिवार में हुआ था। उन्होंने जीवन में आत्मनिर्भर बनकर सफलता की सीढ़ी हासिल की। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में आत्मनिर्भर होना चाहिए।

उ. 2 (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **समझकर लिखिए।**

(i)

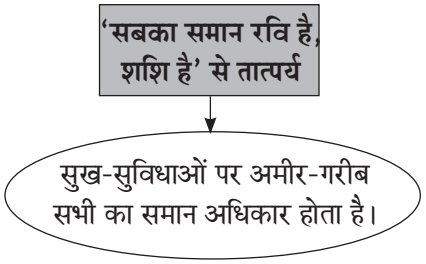

1

(ii)

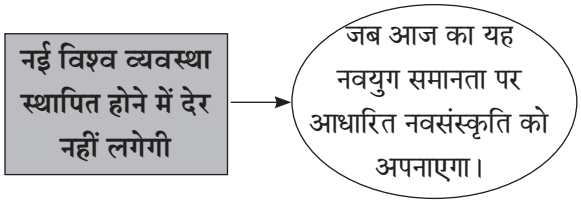

1

(ii) **उत्तर लिखिए।** **1**

(I) भूमि, गगन, पवन, रवि, शशि

(II) मुक्त

(2) **वचन बदलिए।** **1**

(i) संस्कृति - संस्कृतियाँ (ii) व्यवस्था - व्यवस्थाएँ

(3) पुराने जमाने में हमारे देश में जाति-प्रथा व धार्मिक आडंबरों को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता था। स्त्रियों को सामाजिक बंधन में बँधकर रहना पड़ता था। उन्हें शिक्षा का अधिकार नहीं था। समाज में पुरुष-प्रधान व्यवस्था थी। पुराने रीति-रिवाजों को अधिक महत्त्व दिया जाता था। आधुनिक युग में नए मूल्यों एवं नई विचारधारा का प्रचार एवं प्रसार हो जाने से जाति-पाति की भावना समाज से आहिस्ता-आहिस्ता खत्म होती जा रही है। आज हमारे समाज में स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार दिया गया है। आज कई ऐसे परिवार हैं, जो स्त्री-प्रधान हैं। आज हम स्वच्छंद एवं स्वतंत्र हैं। हमें मनचाही शिक्षा या मनचाहा व्यवसाय चुनने का अधिकार है। नव संस्कृति को अपनाने से हमारे विचारों में भारी परिवर्तन हुआ है। आज हम शांति एवं एकता को अपनाने की बात कर रहे हैं। नव संस्कृति ने हमें अध्यात्म व विज्ञान इन दो विषयों से भली-भाँति परिचित कराया है। नव संस्कृति एवं नव विश्व व्यवस्था से आज व्यक्ति, समाज और राष्ट्र प्रगति कर रहा है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना धीरे-धीरे प्रबल हो रही है। **2**

विभाग 3 - व्याकरण विभाग

उ. 3 सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) **निम्नलिखित शब्दों का मानकवर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर कीजिए ।** **1**

(i) पत्थर (ii) कुरीति

(2) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **1**

(i) **ऊपर** : उसके ऊपर एक किताब है।

(3) (i) **सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।** **1**

वह तुम्हें हमेशा बुरा-भला ही कह रही है।

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर लिखिए।** **1**

पूर्ण भूतकाल

(4) (i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए।** **1**

छठी का दूध याद आना - कठिनाई का अनुभव करना ।

वाक्य : बिना पूरी तैयारी के परीक्षा में बैठने के कारण सुरेश को **छठी का दूध याद आ गया ।**

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अधोरेखांकित शब्दसमूह के लिए कोष्ठक में दिए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए।** **1**

अचानक पिता जी द्वारा पर्यटन पर जाने का निर्णय सुनकर बच्चे **फूले न समाए।**

(5) (i) **निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।** **1**

दु: + लभ - दुर्लभ = विसर्ग संधि

(ii) **निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और भेद संधि लिखिए।** **1**

सज्जन - सत् + जन = व्यंजन संधि

(6) (i) **रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए।** **1**

संयुक्त वाक्य

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के अनुसार भेद लिखिए।** **1**

विधानार्थक वाक्य

विभाग 4 - रचना विभाग

उ. 4 **(अ)** **4**

(i)

श्रेयस कुलकर्णी
विवेकानन्द विद्यालय,
रायगड़ : ५०७८९६
दिनांक : १४ जून, २०१८

सेवा में,
श्रीमान जिला अधिकारी,
नगर परिषद, रायगड़।

विषय : 'विश्व ओजोन दिवस' के अवसर पर रैली निकालने हेतु निवेदन पत्र।

माननीय महोदय,

मैं कुमार श्रेयस कुलकर्णी विवेकानन्द विद्यालय, रायगड़ का 'विद्यालय गतिविधि प्रमुख' हूँ। मैं यह पत्र आपको विद्यालय के प्रधानाचार्य जी के आदेशानुसार लिख रहा हूँ।

आप जानते हैं, १० सितंबर के दिन 'विश्व ओजोन दिन' के रूप में मनाया जाता है। अत: हम अपने विद्यालय की ओर से इस दिन की महत्ता एवं जागरूकता लोगों में निर्माण करने हेतु एक रैली निकालना चाहते हैं। इस दिन विद्यालय की ओर से सुबह ९ बजे निकाली जाने वाली रैली में कुल मिलाकर ८० बच्चे व ८ शिक्षक होंगे। यह रैली हमारे विद्यालय के सामने से गंगाधर रोड के मेन हायवे तक निकाली जाएगी। वहाँ से हम करीबन ११ बजे तक विद्यालय में वापस आ जाएँगे। रैली के दरम्यान सड़क से आने-जानेवाले लोगों को हम 'प्रदूषण पर रोक लगाना व ओजोन को सुरक्षा प्रदान करना' आदि से परिचित कराएँगे।

आशा है कि आप हमें रैली निकालने की अनुमति देंगे। हम आपके अनुमति पत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।
धन्यवाद !

भवदीय,
श्रेयस कुलकर्णी

विवेकानन्द विद्यालय
(विद्यालय गतिविधि प्रमुख)
ई-मेल आईडी : shreyas@gmail.com

अथवा

(ii) दिनांक - २७ मई, २०१८ **4**

प्रिय मनोज

मधुर स्मृति!

बहुत-बहुत बधाई हो! मुझे अभी-अभी तुम्हारे मित्र मानव का टेलिफोन संदेश मिला। पता चला कि तुमने इस वर्ष नौंवी कक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अगले वर्ष तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा होनी है। आशा है, उसमें भी तुम अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल करोगे।

मनोज! मुझे इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई है। मन में इतनी खुशी हुई कि सारे जरूरी काम छोड़कर तुम्हें बधाई-पत्र लिख रहा हूँ। मेरी ओर से हार्दिक बधाई। ईश्वर करें तुम दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करों। मम्मी-पापा भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

पुन: बधाई के साथ।

तुम्हारा मित्र,

सुजल

नाम : सुजल सिंह
पता : अशोक नगर,
वी. पी. रोड,
नाशिक।
ई-मेल आईडी : sujal123@gmail.com

उ. 4 (आ)

(i) **मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए।** **4**

'कुसंगति का परिणाम'

प्रयाग में चक्रधर नामक एक युवक रहता था। युवक पढ़ा-लिखा था; लेकिन गलत संगति में रहने के कारण वह बुरी आदतों का शिकार हो गया था। वह दिन-रात अपने बुरे दोस्तों के साथ रहता, मौज-मस्ती करता और गलत व्यसनों के चक्कर में पड़ा रहता।

एक बार की बात है। उस युवक के बुरे दोस्तों ने एक घर में चोरी की। चोरी में चुराया हुआ सामान लाकर उन्होंने चक्रधर के घर में उसके लाख मना करने पर भी छुपा दिया। चोरी की जाँच करते हुए पुलिस को भनक मिल गई कि चोरी का माल कहाँ छुपाया गया है। उन्होंने उस युवक के घर में छापा मारा। पुलिस को वहाँ से चोरी के सामान बरामद हुए। साथ-साथ पुलिस ने उस युवक और उसके दोस्तों को भी धर-पकड़ा।

दूसरे दिन पुलिस अधिकारी ने युवक से पूछताछ की। पूछताछ के दौरान अधिकारी को पता चला कि इस चोरी में उसका हाथ नहीं है। गलत संगति के कारण वह भी इस जुर्म में फँस गया है। उसकी सच्चाई जानकर पुलिस अधिकारी ने उसका समुपदेशन करवाया और उसे उचित सलाह दी; ताकि वह बुरे लोगों की संगति छोड़कर सही मार्ग पर चल सके। अधिकारी की सलाह का चक्रधर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। रिहा होने के पश्चात उसने अपने बुरे दोस्तों का साथ छोड़ दिया और छोटा-मोटा व्यवसाय करना शुरू कर दिया।

आहिस्ता-आहिस्ता समय बीतता गया और उस युवक का व्यवसाय बढ़ने लगा। उसके कारोबार में वृद्धि होने लगी। उसने अपने जैसे गलत संगति के शिकार हुए युवकों को अपनी कंपनी में नौकरियाँ दीं; ताकि वे बुरी संगति में फँसकर तथा गलत मार्ग पर चलकर स्वयं को बरबाद न करें।

सीख : कुसंगति का फल हमेशा बुरा होता है और सुसंगति का फल सदैव अच्छा ही होता है।

अथवा

(ii) (I) विश्वास के कारण क्या होता है ? **4**

(II) विश्वास के आधार पर मनुष्य क्या करता है ?

(III) संसार कैसे चल रहा है ?

(IV) संसार के राष्ट्र किस आधार पर एक-दूसरे की सहायता करते हैं ?

उ. 5 **(अ) विज्ञापन लेखन :** **4**

टॉप मॉडल की घड़ियाँ

सबको पीछे छोड़े
मेरी प्यारी घड़ी देखो
'टाइटन' रिश्ता जोड़े।

घड़ियों में घड़ी 'टाइटन' घड़ी !!!
बहुत ही न्यारी और बहुत ही प्यारी !!!

विशेषताएँ

* दो साल की गारंटी
* अलग-अलग रंगों में उपलब्ध
* तरह-तरह के मॉडल्स
* दाम किफायती

उपयोगिता

* दिन रात चलना
* कभी न थकना
* कभी न बिगड़ना

संपर्क

न्यु वॉच कंपनी
स्टेशन रोड, दादर (पूर्व), मुंबई - १४
दूरध्वनि : ९८४५६७८९३३

उ. 5 **(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर ६० से ८० शब्द में निबंध लिखिए ।** **6**

(i) संस्कृत में एक सुभाषित है - सर्वे भवन्तु सुखिन। सर्वे सन्तु निरामया:। इसका अर्थ यह है कि संसार में सब सुखी रहें, सब निरोग रहें और विश्व में कोई दुखी न हो। इसे ही विश्व बंधुत्व कहते है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ऐसा जो कहा गया है, वह शत-प्रतिशत उचित है। जब तक व्यक्ति विश्व बंधुत्व को नहीं अपनाएगा; तब तक मानवता अधूरी रहेगी, मानव अधूरा रहेगा, राष्ट्र अधूरा रहेगा और विश्व भी अधूरा ही रहेगा।

आज हमारे देश में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में अशांति, अराजकता, हिंसा आदि प्रवृत्तियाँ दिखाई दे रही हैं। इनके कारण व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की हानि हो रही है। आज हमारे समाज में ईर्ष्या, द्वेष, नफरत की भावनाएँ बढ़ रही हैं। इस कारण समाज में दुश्मनी का भाव पनपने लगा है। ये दशा राष्ट्र की भी है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की सीमा पर आए दिन हमला कर रहा है। इस कारण अशांति निर्माण हो रही है। इसी कारण 'विश्व-बंधुत्व' वर्तमान युग की माँग है। विश्व बंधुत्व की भावना मानव अधिकारों की सुरक्षा की कुंजी है। विश्व-बंधुत्व की भावना को अपनाने से सभ्य मानवी समाज विकसित होगा। गरीबी, जाति, धर्म, ऊँच-नीच आदि समस्याओं का समाज से निर्मूलन होगा।

विश्व-बंधुत्व की भावना को अपनाने से विश्व में अहिंसा का प्रचार होगा। विश्व में शांति निर्माण होगी। युद्ध व हिंसा खत्म हो जाएगी। सर्वत्र समानता दिखाई देगी। सर्वत्र भाईचारा निर्माण होगा। मानवीय मूल्यों का संवर्धन होगा। आखिर, प्रत्येक मानव को श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए विश्व बंधुत्व की भावना को आत्मसात करना ही होगा।

अथवा

(ii)

मेरा प्रिय लेखक

''कुछ बात सोचता हूँ, शब्दों को जोड़ कर,
एहसास मिल रहे हैं, सबको निचोड़ कर''

इस तरह शब्दों को जोड़ कर तथा भावनाओं को अल्फाजों में निचोड़ कर लेखक एक सुंदर रचना का निर्माण करता है। मैंने अनेक लेखकों की रचनाएँ पढ़ी है। किंतु मेरे प्रिय लेखक तो मुंशी प्रेमचंद ही हैं। उनकी कहानियाँ सरल, स्वाभाविक और मर्मस्पर्शी होती है।

मुंशी प्रेमचंद को कथा-सम्राट कहा गया है। उन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ और दर्जन भर उपन्यास लिखे हैं। वे पहले उर्दू में लिखते थे। बाद में वे हिंदी में लिखने लगे। अपनी रचनाओं में उन्होंने देश की दलित, दु:खी और दरिद्र जनता का सजीव वर्णन किया है।

कहते हैं कि मुंशी प्रेमचंद जनता के जिस वर्ग के संपर्क में आते थे, उसे बड़ी बारीकी से देखते थे और उसके सुख-दु:ख से भलीभाँति परिचित हो जाते थे। इसलिए वे जन-जीवन का सफल चित्रण कर सके। वे अपनी सफलता और सादगी से सबके आत्मीय बन जाते थे। यही प्रेमचंद जी की विशेषता थी। इसलिए उनकी रचनाएँ हृदयस्पर्शी बन सकी हैं।

मेरे मन पर प्रेमचंद की निम्नलिखित कहानियों की गहरी छाप है :

'सुजान भगत', 'पूस की रात', 'नमक का दारोगा', 'कफन', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'बड़े घर की बेटी', 'ईदगाह' और 'बोध'।

सरल, बोलचाल की, मुहावरों की मुहावरेदार भाषा में लिखी ये कहानियाँ मन को जकड़ लेती हैं। ये बराबर याद रहती है और इनके पात्र मन में बस जाते हैं।

आजकल जो कहानियाँ पत्र-पत्रिकाआं में छपती है, वे प्राय: जटिल होती हैं। उनमें तरह–तरह के नए-नए विचार मिलते हैं, किंतु ये कहानियाँ हमारे मन पर अपनी छाप नहीं छोड़ पाती। संभव है, हम इन्हें पूरी तरह न समझ पाते हों। शायद इसलिए हम हमेशा मुंशी प्रेमचंद की कहानियों को ही तलाश करते हैं अथवा उसकी पढ़ी हुई कहानियों को ही बार-बार पढ़ना चाहते हैं।

यदि अवसर प्राप्त हुआ तो मैं मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं का और अधिक अध्ययन करुँगा।

❖❖❖